QM2URT

सूक्तयः

1. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् – श्रद्धावान् व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है।
2. योगः कर्मसु कौशलम् – कर्मों में कुशलता ही योग है।
3. वीरभोग्या वसुन्धरा – पृथ्वी वीरों के द्वारा भोगी जाती है।
4. महाजनो येन गतः स पन्थाः – श्रेष्ठ लोग जिधर से जाएँ वही मार्ग है।
5. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः – जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।
6. सत्यमेव जयते नानृतम् – सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।
7. परोपकाराय सतां विभूतयः– सज्जनों की सम्पत्ति भलाई के लिए होती है।
8. दूरतः पर्वताः रम्याः – दूर के ढोल सुहावने।
9. धर्मेण हीनाः पशुभिर्समानाः – धर्महीन (मनुष्य) पशु के समान है।
10. लोभः पापस्य कारणम् – लोभ पाप का कारण है।

शब्दार्थाः

लभते = पाता है। कर्मसु = कर्मों में। कौशलम् = कुशलता। वसुन्धरा = पृथ्वी। भोग्या = भोगने के योग्य करता है। महाजनो = सज्जन, महापुरुष। अनृतम् = असत्य। सताम् = सज्जनों की। रम्याः = सुन्दर। लोभः = लालच।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(अ) कः ज्ञानं लभते ?
(ब) देवताः कुत्र रमन्ते ?
(स) धर्मेण हीना नराः कीदृशाः भवन्ति ?
(द) दूरतः पर्वताः कीदृशाः दृश्यन्ते ?
(इ) पापस्य कारणं किम् ?

(2) ''लभ्''धातु का रूप लट्लकार आत्मनेपद में तीनों पुरुषों और तीनों वचनों में लिखिए।

(3) निम्नांकित शब्दों का सन्धि विच्छेद कर प्रकार लिखिए–

नार्यस्तु, सत्यमेव, नानृतम्।

(4) निम्न शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए –

ज्ञानम्, सताम्, लोभः, जयति

(5) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. श्रद्धावान् ..... ज्ञानम्।
2. परोपकाराय सतां .....।
3. ..... जयते नानृतम्।
4. धर्मेण ..... पशुभिः समानाः।
5. दूरतः पर्वताः .....।

QM4VQH